233 P
854
H

52
20/1

1196
10121

नौजवान ग्रन्थमाला का आठवां पुष्प

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
13 DEC 1930

* वन्देमातरम् *

स्वराज्य का तूफान

अथवा

क्रान्ति चिंगारियां

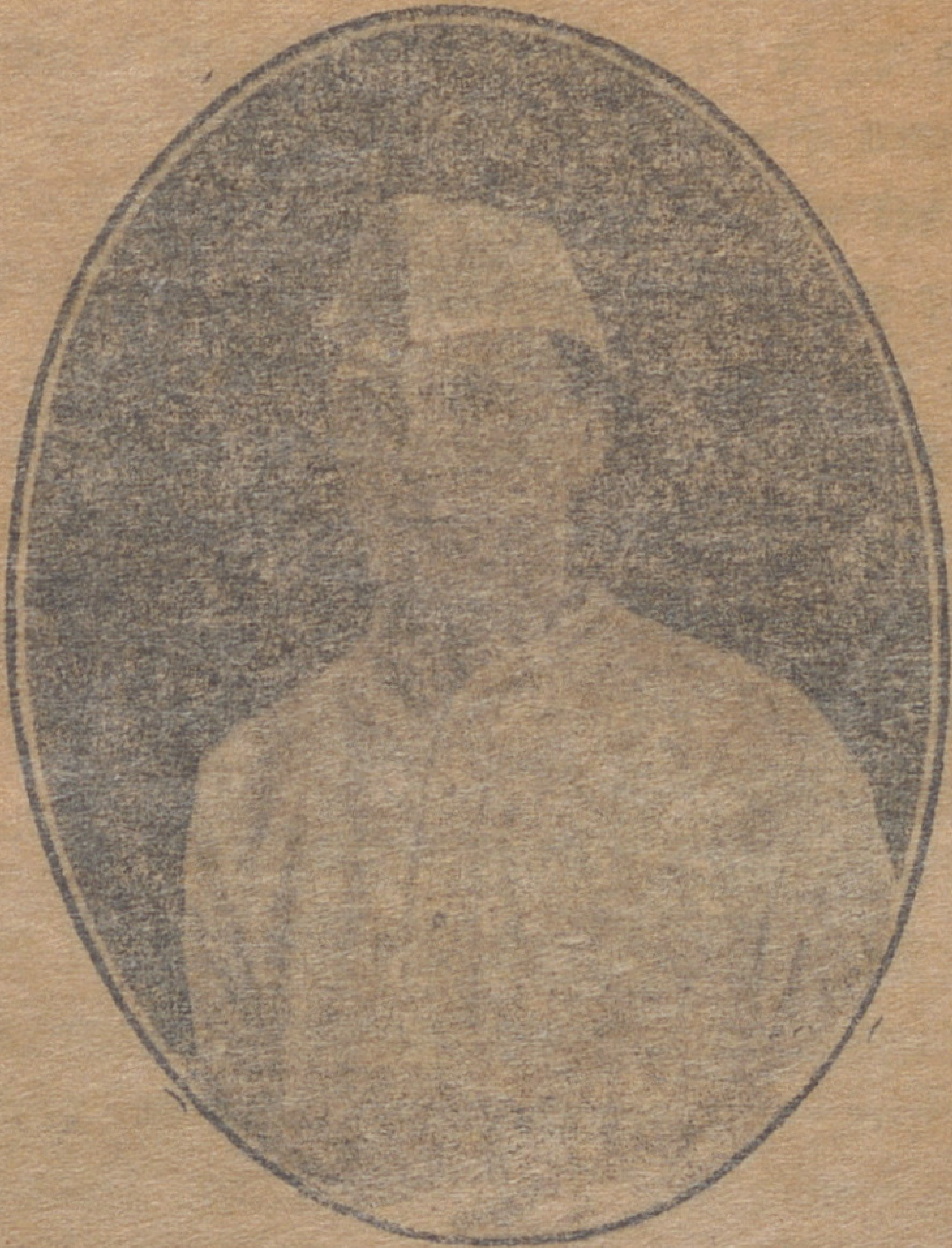

संग्रहकर्ता—आर० एन० शर्मा।

प्रकाशक—अग्रवाल बुकडिपो खारीबावली देहली

द्वितीय बार] सन् ३० [मूल्य -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
NO 354
Date 22.12.71
GOVT. OF INDIA
891.431
Sh 23 Bw

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

क्या

विलखती विधवा [नाटक]

आगरे में क्रान्ति

[जिसका पहिला एडीशन हाथों हाथ बिक गया ।]

एक अग्रवाल सेठ का छोटी उमर में अपने बेटे की शादी करना। शादी के चन्द दिन बाद लड़के का देहान्त हो जाना। उसकी विधवा स्त्री पर सास नन्द का अत्याचार। उसका अत्याचार सहते २ घर से निकलने का विचार करना। वह विचार सुसर को मालूम होना। सुसर का विधवा को जहर देने का विचार। ईश्वरी कोप से सुसर का खुद जहर पी लेना। बाद में सौतेली सास का उसको घर से निकाल देना, विधवा का पुरोहित के पास जाना और पुनर्विवाह के लिये प्रार्थना करना। पुरोहित का विरोध। इस पर विधवा का अदालत में जाना और एक देश भक्त की मारफत नेशन पर दावा। सनातन धर्मियों का घोर विरोध। अदालत में दोनों तरफ की बहसें। शास्त्रोक्त प्रमाण, विधवा का रोमांचकारी बयान, जूरियों की राय, अदालत का जजमेंट पढने लायक है।

यह नाटक २०००० की जनता में "आनन्द-नाटक" की तरफ से आगरे में खेला जा चुका है और **ग्वालियर महाराज** ने भी अपने नाटक घर में छपने से प्रथम खिलाया था। पूरे हालात पढ़ियेगा। पृष्ठ संख्या २५० है। अन्दर अदालत का चित्र और तीन अन्य चित्र हैं। टाइटिल पर तिरंगा चित्र। मूल्य १॥) डाक खर्च अलग। चार पुस्तक मनीआर्डर से दाम भेजने पर ६) रु० में मिलेंगी।

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली, देहली।

क्रान्ति की चिंगारियां

अथवा

स्वराज्य का तूफ़ान।

दुखी है भारत दुखी है भारत

सदा यह हरसू से आरही है दुखी है भारत दुखी है भारत।
हमें यह कुदरत बता रही है दुखी है भारत दुखी है भारत॥
जो बुलबुले बाग़ इश्क़ गुल में चमन में करती थी नग़मासंजी
वह रोके रट अब लगा रही है दुखी है भारत दुखी है भा०।
जो गैर मुलकी मौरिखों ने है खींची तसवीर हाल अपनी॥
वह साफ सबको बतारही है दुखी है भारत दुखी है भारत।
करोड़ों इनसानों को मुयस्सर नहीं है नान एसवेनीर यकसर॥
लबों पेजान अकसर आरही है दुखी है भारत दुखी है भारत।
जो गेहूं रुपया का तीन मन था वह ८)सेर आज बिकरहाहै॥
गरानी क्या रंग लारही है दुखी है भारत दुखी है भारत।
यतीम विधवाये आह लाखों तडफ रही है बलक रही है॥
वह उनकी आहे रिला रही है दुखी है भारत दुखी है भारत।
कभी है ताऊन वो हैज़ा जारी कभी क़हत और ज़ाला बारी॥
वबा भी आफत वह ढारही है दुखी है भारत दुखी है भारत।

बची न ज़च्चा न उससे बच्चा कज़ा का है वार कितना सच्चा ॥
लहद में सबको सुला रही है दुखी है भारत दुखी है भारत ।
किसान दुनिया के अन्न दाता तरसते हैं हाय रोटियों को ॥
सितम गुलामी यह ढा रही है दुखी है भारत दुखी है भा० ।
ग़ज़ब है तन ढाकने को अपने है हिन्द मुहताज मानचेस्टर ॥
सुई जो जरमन से आरही है दुखी है भारत दुखी है भारत ।
लगान हैफ इसक़दर बढ़ा है किसान फाक़ों से मर रहे हैं ॥
मज़े हुकूमत उड़ा रही है दुखी है भारत दुखी है भारत ।
पढ़े लिखे पांच फी सदी से नहीं ज्यादा वतन में अब भी ॥
घटा जहालत की छा रही है दुखी है भारत दुखी है भारत ।
समझते हैं गैर मुलक वाले अरे यह काले नहीं हैं काले ॥
यह एक मुद्दत से ख़्वारही है दुखी है भारत दुखी है भारत।
पहुंच के हर लहज़ा कुर्ब इरविन हमेशा मिसले पयाम तरक्की
सबा बराबर सुना रही है दुखी है भारत दुखी है भारत ।
न हो समायत मुज़ायक़ा क्या हुऐ हैं बेदार नौजवां अब ॥
दुख उनकी भी आतमा रही है दुखी हैं भारत दुखी है ।
उठो भी शोख अबकमर को कसकर हो कांग्रेस वरकरोंमें शामिल
नही तुम्हें शर्म आरही है दुखी है भारत दुखी है भारत ॥

———

हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर।
आज तो चिल्ला रहा संसार बन्देमातरम् ॥ ३ ॥
जेल में चक्की घसीटे भूक से हो मर रहा।
उस समय हो बक रहा बेज़ार बन्देमातरम् ॥ ४ ॥
मौत के मुंह पर खड़ा है कह रहा जल्लाद से।
भौंक दे सीने में वह तलवार बन्देमातरम् ॥ ५ ॥
डाक्टरों ने नब्ज़ देखी, सर हिला कर कह दिया।
होगया इस को तो ये आज़ार बन्देमातरम् ॥ ६ ॥
ईद होली और दशहरा, शबरातसे भी सौ गुना।
है हमारा लाड़ला त्यौहार बन्देमातरम् ॥ ७ ॥
ज़ालिमों का ज़ुल्म भी काफ़ूर सा उड़ जायगा।
फैसला होगा सरे दरबार बन्देमातरम् ॥ ८ ॥

गज़ल आज़ादी का पैगाम ३

आबरू पर मुल्क की हम सब फ़िदा हो जायंगे।
कांग्रेस पर हर तरह से हम फ़िदा हो जायंगे ॥
हासिल आजादी करेंगे जिस तरह भी हो सके।
देख लेना दास के नक़शे कदम हो जायंगे ॥
क्यों हमें कमजोर समझे हो निहत्था जान कर।
गर बिगड़ बैठे तो फिर हम इक बला होजायंगे ॥
आग से मत खेलना हम हैं वो गोले आग के।
गर भड़क उठे तो पागमें कज़ा हो जायंगे ॥
अन्दलीबाने चमन लो फिर बहार आने को है।
आगया है वक्त अब नाले रसा हो जायंगे ॥

माल की होगी जरूरत तो लुटा देंगे गौहर।
मुल्को मिल्लत के लिये हम सब गदा होजायँगे॥
इक नये अन्दाज से किश्ती चलेगी मुल्क की।
और जवाहर लाल नेहरू नाखुदा हो जायँगे॥
आने वाला वक्त है तो देख लेना दोस्तो।
आज जो आजिज़ हैं कल वह क्या से क्या होजायँगे॥

इन गांधी टोपी वालों ने ४

इक लहर चला दी भारत में, इन गांधी टोपी वालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया इन गांधी टोपी वालों ने॥
सदियों की गुलामी में फँस कर, अपने को भी जो भूल चुके।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपी वालों ने॥
सर्व स्वदेश हित कर दो तुम, अगर सपूत हो माता के।
सर्वस्व त्याग का मन्त्र दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
अनहित में भारत माता के, जो लगे देश द्रोही बन कर।
उन को सत-पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
पट बन्द हुये कितने मिल के, लंकाशायर भी चीख़ उठा।
चरखे का चक्र चलाया जब, इन गांधी टोपी वालों ने॥
रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सिर धुन बतलाते हैं।
खद्दर से प्रेम किया जब से, इन गांधी टोपी वालों ने॥
आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनों के प्राण पियारे हैं।

नेता गांधी को बना लिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
"अब मेल करो आपस में तुम, जंजीर गुलामी की तोड़ो।
माना गांधी का कहना ये, इन गांधी टोपी वालों ने॥
है विकट समस्या तीस की भी, उसको भी हल कराना होगा।
जरिया बस एक निकाल लिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
युवकों के हृदय दुलारे हैं, आंखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहर को राजा, इन गांधी टोपी वालों ने॥
खुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी टोपी वालों ने॥

भजन चरखा ९

चला दो चर्खा हर एक घर में, ये चर्खे तब तुम हिला सकोगे।
बंधा तभी सिलसिला सकोगे, उन्हें कबड्डी खिला सकोगे॥
हमारे चरखे में ऐसा फन है, जो आजकल की मशीनगन है।
वो मानचेस्टर वो लंकाशायर, का जीत इस से किला सकोगे॥
रुई न भारत की हो रवाना, बुने स्वदेशी का ताना बाना।
इसी तरह से विदेशी बणिज को, आर फांसी दिला सकोगे॥
न पट विदेशी का लो सहारा, शरीर चाहे रहे उघारा।
बचे बहत्तर करोड़ रुपया, तब अपने बच्चे जिला सकोगे॥
मिला लो भाई गले लगा के स्वदेशी का तुम सबक पढ़ा के।
विदेशी चीजों को दो हटा के, फिर चैन बंशी बजा सकोगे॥

चरखा चलाके गांधी भगवान बनगया

जब से है गांधी का यह स्थान बन गया।
हिन्दुस्तान ऐक गुलिस्तान बन गया॥
था कृष्ण जी का चक्र शिवदर्शन जो रिपुदमन।
चरखा चला के गांधी भगवान बनगया॥
उनकी नसीहतों पे अमल जिसने कुछ किया।
हैवान से फिर्शता वह इनसान बन गया॥
आया था जो गुलामों को आज़ाद करने को।
वह गांधी भी जेलका मेहमान बनगया॥
नाला जो निकला दिलसे वतन के मलाल में।
अर्जुन का तीर राम का वह बान बनगया॥
खद्दर से सच्ची लक्ष्मी पूजा जो दी बता।
हर एक घर है राम का स्थान बनगया॥
मन्दिर बनी सोराज का ऐ शोख़ अबतो जेल।
मुशकिल जो काम था हमैं आसान होगया॥

राशट्रय देवियां

झन्डा आज़ादी का निकली है यह लेकर देवियां।
मर्द बुज़दिल बनगये और जैग़मेनर देवियां॥
ऐ जवां मर्दो तुम्हें कुछ शर्म आनी चाहिये।
जेल जाने के लिये उठ्ठी हैं यकसर देवियां॥
रूह लक्ष्मी बाई और दुर्गावती की इनमें है।
हैं चली सत्याग्रह करने जो उठ कर देवियां॥
तोप और बन्दूक से यह जब ज़रा डरती नहीं।
क्या डरेंगी फिर पुलिस के खाके हन्टर देवियां॥

सत्यवती जा और मिसेज़ मित्रा है फखरेमुल्कहिन्द ।
काबिले ताज़ीम हो दोनो न क्योंकर देवियां ॥
शोख देवी शक्ती उनकी आतमा में है ज़रूर ।
लौटेंगी जेलों से यह सोराज्य लेकर देवियां ॥

लेखक—पण्डित गोविन्द प्रसाद मिश्र

सायमन साहब ने लिखा है हिन्द की तकदीर में ।
तौक़ गर्दन में रहे और पैर हों जंजीर में ॥
कौन मानेगा भला कहना तुम्हारा अय जनाब ।
रास्ती की बू नहीं है आपकी तहरीर में ॥
लद गये दिन रोब के जाता रहा कुल एतबार ।
ख़ौफ की बू तक नहीं बाकी रही ताज़ीर में ॥
मौत का भी प्यार करना सीखते जाते हैं हम ।
इस कदर उलटा असर है आपकी तदबीर में ॥
कह रही है आस्मां से लाज पतकी रूहे पाक ।
अब नहीं बंधने का सैदा इन्डिया नखचीर में ॥
आपकी शदा रंगिया बस देखने ही भरकी हैं ।
जिस तरह नाज़ो अदा की शान हो तस्वीर में ॥
शाने शाही की नहीं दुनियां में गुन्जायस रही ।
कह रहे हैं रूसो टरको जोर की तकरीर में ॥
देखता है ख्वाबेशाही अब भी इंगलिस्तां अगर ।
हम भी कह सकते हैं कुछ इस ख्वाब की ताबीर में ॥
जलने ही वाला है उठता है धुवा ज़ालिम के घर ।
है यकी कामिल मुझे इस गांधी की तासीरमें ।

जेलखाने की भी खुश होके बढ़ायें रौनक।
एक क्या लाखों बना जायंगे मरते मरते॥
मातृ-भूमि के लिए जान निछावर कर दें।
सबक भारत को पढ़ा जायंगे मरते मरते॥
हैं तो नाचीज मगर इतनी जुरत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायंगे मरते मरते॥
दत्त, भगत, दयानन्द, तिलक, गांधी का।
सबको फरमान सुना जायंगे मरते मरते॥

शहीदों के खूं का असर ६

शहीदों के खूं का असर देख लेना।
मिटायेंगे जालिमका घर देख लेना॥
किसी के इशारे के हम मुन्तजिर हैं।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना
झुकादेंगे गरदन को हम जेर खंजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना॥
जो खुदगर्ज गोली चलाते हैं हमपर।
तो कदमोंमें उनकाही सर देख लेना॥
जो नकश हमने खींचाहै खूनेजिगर से।
वह होगा कभी बारवर देख लेना॥
किनारे पे आये भंवरसे वह किश्ती।
वह आयेगी एकदिन लहर देखलेना॥
बलायें ये जायेंगी खुद सर निगूं हो।
नहीं होगी इनकी गुजर देख लेना॥
खुजद ही हुआ हिन्द आज़ाद अपना।
छपेगी ये एक दिन खबर देख लेना॥

फांसी के तख्ते पर देशभक्तों के मनोभाव १०

कहते हैं अलविदा अब हम इस जहान को।
जाकर खुदा के घर फिर आया न जायेगा॥
अहले वतन अगरचे हमें भूल जायेंगे।
अहले वतन को हमसे भुलाया न जायगा॥
जुल्मो सितम से तंग न आयेंगे हम कभी।
हम से सर नियाज़ झुकाया न जायगा॥
इससे ज्यादा और सितम क्या करेंगे वह।
इससे ज्यादा उन से सताया न जायगा॥
हम ज़िन्दगी से रूठ कर बैठे हैं जेल में।
अब ज़िन्दगी से हम को मनाया न जायगा॥
यह सच है मौत हमको मिटा देगी दहर से।
लेकिन हमारा नाम मिटाया न जायगा॥
हमने लगाई आग है जो इन्कलाब की।
इस आग को किसी से बुझाया न जायगा॥
यारो है अब भी वक्त हमें देख भाल लो।
फिर कुछ पता हमारा लगाया न जायेगा॥
आज़ाद हम कर न सके अपने मुल्क को।
खंजर यह मुँह खुदा को दिखाया न जायगा॥

शहीद गर्जना ११

(ले०— काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल)

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना॥

खूं खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झगडे पर जां निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुसल्लिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह अब किसे है जेलओ दमनकी प्यारो।
इक खेल हो रहा है फांसी पे झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना॥

राष्ट्रपति जवाहरलाल नं० १२

भारत का डंका आलम में बजवाया वीर जवाहर ने।
स्वाधीन बनो, स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर ने॥१॥
वह लाल जो मोतीलाल का है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हट करके, जगवाया वीर जवाहर ने॥२॥
अंगरेजों की मृगतृष्णा में, लटके थे सब भारतवासी।
पर आज़ादी का मंतर, सिखलाया वीर जवाहर ने॥३॥
दे दे स्पीचें ज़िन्दादिल, कमजोरी दूर भगा दी सब।
रग-रग में खूं आजादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने॥४॥
खोटी है राजनीत उसने, छानी है खाक विदेशों की।
समता स्वतन्त्रता का मारग, दिखलाया वीर जवाहर ने॥५॥
पूंजीपति जमीदार करते हैं, जुल्म मजूर किसानो पर।
बन साथी दीनों का धीरज, धरवाया वीर जवाहर ने॥६॥

हिंदू मुसलिम सिख जैन ईसाई पारसी भाई-भाई हैं।
सब ऊँच-नीच का विषमभेद, मिटवाया वीरजवाहरने ॥७॥
इक रोशन आग धधकती है, आज़ादी की उसके दिल में।
जिसे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवाहर ने ॥८॥
नवयुवक करोड़ों भारत के, भूले थे भोग विलासों में।
युवकोंकी शक्ति को इकदम उकसाया वीर जवाहर ने ॥९॥
आदर्श-चरित से वह अपने, युवकों का सम्राट बना।
आजादी का ऊँचा झण्डा, लहराया वीर जवाहर ने ॥१०॥
बिजली है वाणी में जिसकी, जादू है आंखों में उसकी।
देखा जिसको एकपल भरमें, अपनाय वीर जवाहर ने॥११॥
गांधी जब आशिष दे बोले "खुद क़ुर्बान बनूंगा मैं तेरा।
तब सेहरा राष्ट्रपति का सिर, बंधवाय वीर जवाहर ने॥१२॥
लश्कर "प्रकाश" यह भारतका, अचरज से डूबी है दुनिया।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में मुसकाया वीर जवाहर ने ॥१३॥

वीरप्रतिज्ञा नं० १३

कसली कमर अबता कुछ कर के दिखायेंगे।
आजाद ही हो लेंगे या सर ही कटा देंगे॥
हटने के नहीं पीछे डर कर कभी जुल्मों से।
तुम हाथ उठाओगे हम पैर बढ़ा देंगे॥
बेशस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चरखे का।
चरखे से जमीन को हम यों चर्ख गुंजा देंगे॥
परवा नहीं कुछ दम की गम नहीं मातम की।
है जान हथेली पर एक दम में गवां देंगे॥

उफ़ तक भी ज़ुबां से हरगिज न निकालेंगे।
तलवार उठाओ तुम हम सर को झुका देंगे॥
सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका।
चलवाओ गन मशीनें हम सीना अड़ा देंगे॥
दिलवाओ हमें फांसी ऐलान दे कहते हैं।
ख़ूं से ही शहीदों के हम फ़ौज बना देंगे॥
मुसाफिर जो 'अंडमन' के तूने बनाये जालिम।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे॥

सर फरोशी की तमन्ना १४

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है अब जोर कितना बाज़ुवे क़ातिल में है॥
रह बरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज्जते सहरान वर्दी दूर यह मंजिल में है॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मकतल में कातिल कह रहा है बार २
क्या तमन्नायें शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैरकी महफिल में है॥
अब न अगले वलवलेहैं और न अरमानोंकी भीड़।
सिर्फ मिटजानेकी हसरत अबदिले बिस्मिल में है॥

वीर गर्जना नं० १५

भारत के शेर जागो बदला है अब जमाना ।
प्यारे वतन को इस दम आजाद है बनाना ॥
मत बुजदिलीको हरगिज तुम पासदो फटकने ।
आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वतन्त्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक ।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥

यदि आप बेरोज़गार हैं

तो

निराश न हों

यदि आप बेरोजगार हैं और स्वतन्त्रता से जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो आप हमारे यहां के १६ सफे के ट्रैक्ट क्यों न मँगा कर बेचते हो। १६ सफे के ट्रैक्ट १॥) सैकड़ा व १५) हज़ार थोक व्यापारियों को भेजे जाते हैं। बिना बिकी पुस्तकें वापिस कर लेते हैं व्यौपारियों की मांग व लाभ का विशेष ध्यान रक्खा जाता है। इस के अलावा बम्बई, मथुरा, हाथरस बनारस, लाहौर आदि का थोक माल बिक्री के लिये तैयार रहता है।

१. राष्ट्रीय झगडा	-)	झांसी की रानी	-)
२. आजादीका बिगुल	-)	शारदा बिल	-)
३. क्रान्ति की लहर	-)	गांधी की तोप	-)
४. नमक का इतिहास	-)	लल्लू का चाचा	-)
५. सत्याग्रह की तोप	-)	नकली साधू	-)
६. शहीदों की याद	-)	बिलखती विधवा	-)
७. सुदर्शन चक्र	-)	विधवा दुख दर्शन	≡)
		कांग्रेस के महापुरुष	१॥)

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पताः —

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली

देहली।

नारायणदास गुप्त के प्रबन्धसे द्वारका श्री प्रेस, देहली में छपा।